



白话全本

聊齋誌異

(清) 蒲松齡 原著
本社编
上海古籍出版社

五下

工 242.1
1-1

03859

白話 全本

聊齋誌異

聊齋異

本社編 上海古籍出版社

5463/21

沪新登字 109 号

白话全本聊斋志异

[清]蒲松龄 原著

本社 编

上海古籍出版社出版

(上海瑞金二路 272 号)

新华书店上海发行所发行 上海新华印刷厂印刷

开本 787×1092 1/32 印张 28.25 插页 4 字数 918,000

1992 年 11 月第 1 版 1992 年 11 月第 1 次印刷

印数: 1—10,000

ISBN 7-5325-1225-8

I·595 定价(精): 11.10 元

出版说明

在我国古典文学宝库中,《聊斋志异》是一部著名的短篇小说集,包含很多瑰丽多采、脍炙人口的优秀作品,其中不少作品早已被改编为戏曲,在舞台上盛演不衰;近十余年来,许多作品更被改编成电影和电视剧,深受欢迎。

《聊斋志异》作者蒲松龄字留仙,号柳泉居士,山东淄川(今山东省淄博市)人。生于明崇祯十三年(1640),卒于清康熙五十四年(1715),一生富于著述,诗词文赋、戏剧俚曲,皆有作品传世,而特以《聊斋志异》获誉于生前,不朽于身后。据说与他同时、长他六岁、以政坛重臣而兼文坛名人的王士禛,愿以千金易其稿,这或者只是一时流传的美谈;但王士禛被《聊斋志异》的艺术魅力所吸引,向蒲松龄按篇索阅而不可止,成为《聊斋志异》第一批倾倒者中的一员,则是事实。后来的纪昀,虽以《四库全书》总纂官的“正统”观念,对《聊斋志异》“一书而兼二体”略持异议,却也不得不承认它是“才子之笔”。从康熙年间流传钞本,到乾隆、嘉庆、道光年间刻本蜂出,使这部蒲松龄自称为“孤愤之书”、有所“寄托”的谈狐说鬼而实为现实主义与浪漫主义相结合的短篇小说集,成为家喻户晓的名著。

蒲松龄说自己像“落落秋萤之火”,“才非干宝”,“妄续《幽冥》”,这是他的自谦。他说《聊斋志异》是“集腋成裘”,则确是切身甘苦之谈。这部短篇小说集,是他从二十几岁开始,直至暮年,历四十余寒暑笔耕不辍积累而成的。从小说本身记有的年月未看,康熙七年山东淄川一带大地震,蒲松龄以纪实的手法写

下了《地震》一篇，当时他二十九岁，显然这不是他的处女作；康熙四十六年苏州气候异常，七月初三下起大雪，蒲松龄据传闻写下了《夏雪》、《化男》，当时他年近古稀，显然这也不是他的辍笔之作。所以我们今天欣赏这部题材广阔、主题深刻、情节曲折、想象奇瑰、语言生动、人物形象众多而各各呼之欲出的小说集，不可不看到它是作者以毕生的心血所凝结成的。

为了使今天大多数对文言文还或多或少有点滞涩感的读者能够一睹这部优秀文学名著的全貌，特将我社所出的《聊斋志异》会校会注会评本原文十二卷491篇（其中《寄生》一篇作为《王桂庵》的附篇列入目录，不计入篇数）全部今译出版，比通行本多收60篇。“三会本”附录作者存疑的9篇不收。

上海古籍出版社

1991年11月

DK63/2/

目 录

| | |
|------------|---|
| 出版说明 | 1 |
|------------|---|

卷 一

| | | | |
|------------|----|-----------|----|
| 考城隍 | 1 | 娇娜 | 28 |
| 耳中人 | 2 | 僧孽 | 33 |
| 尸变 | 3 | 妖术 | 34 |
| 喷水 | 4 | 野狗 | 35 |
| 瞳人语 | 5 | 三生 | 36 |
| 画壁 | 7 | 狐入瓶 | 38 |
| 山魈 | 9 | 鬼哭 | 38 |
| 咬鬼 | 10 | 真定女 | 39 |
| 捉狐 | 10 | 焦螟 | 39 |
| 莽中怪 | 11 | 叶生 | 40 |
| 宅妖 | 12 | 四十千 | 42 |
| 王六郎 | 12 | 成仙 | 43 |
| 偷桃 | 15 | 新郎 | 47 |
| 种梨 | 17 | 灵官 | 48 |
| 劳山道士 | 18 | 王兰 | 49 |
| 长清僧 | 20 | 鹰虎神 | 51 |
| 蛇人 | 22 | 王成 | 52 |
| 斫蟒 | 24 | 青凤 | 56 |
| 犬奸 | 24 | 画皮 | 60 |
| 雹神 | 25 | 贾儿 | 63 |
| 狐嫁女 | 26 | 蛇癖 | 66 |

卷 二

| | | | |
|------|-----|------|-----|
| 金世成 | 67 | 祝翁 | 103 |
| 董生 | 67 | 猪婆龙 | 104 |
| 斲石 | 69 | 某公 | 104 |
| 庙鬼 | 70 | 快刀 | 104 |
| 陆判 | 70 | 侠女 | 105 |
| 婴宁 | 75 | 酒友 | 108 |
| 聂小倩 | 81 | 莲香 | 109 |
| 义鼠 | 86 | 阿宝 | 116 |
| 地震 | 87 | 九山王 | 119 |
| 海公子 | 88 | 遵化署狐 | 121 |
| 丁前溪 | 89 | 张诚 | 122 |
| 海大鱼 | 90 | 汾州狐 | 126 |
| 张老相公 | 90 | 巧娘 | 127 |
| 水莽草 | 91 | 吴令 | 131 |
| 造畜 | 93 | 口技 | 132 |
| 凤阳土人 | 94 | 狐联 | 133 |
| 耿十八 | 96 | 潍水狐 | 133 |
| 珠儿 | 97 | 红玉 | 134 |
| 小官人 | 100 | 龙 | 138 |
| 胡四姐 | 101 | 林四娘 | 139 |

卷 三

| | | | |
|-----|-----|------|-----|
| 江中 | 143 | 蝮龙 | 152 |
| 鲁公女 | 143 | 苏仙 | 152 |
| 道士 | 146 | 李伯言 | 153 |
| 胡氏 | 148 | 黄九郎 | 155 |
| 戏术 | 150 | 金陵女子 | 159 |
| 丐僧 | 150 | 汤公 | 160 |
| 伏狐 | 151 | 阎罗 | 161 |

| | | | |
|----------|-----|-----------|-----|
| 连琐····· | 162 | 刘海石····· | 199 |
| 单道士····· | 166 | 谕鬼····· | 200 |
| 白于玉····· | 167 | 泥鬼····· | 201 |
| 夜叉国····· | 171 | 梦别····· | 202 |
| 小髻····· | 175 | 犬灯····· | 202 |
| 西僧····· | 176 | 番僧····· | 203 |
| 老饕····· | 176 | 狐妾····· | 204 |
| 连城····· | 178 | 雷曹····· | 206 |
| 霍生····· | 182 | 赌符····· | 209 |
| 汪士秀····· | 183 | 阿霞····· | 210 |
| 商三官····· | 184 | 李司鉴····· | 213 |
| 于江····· | 186 | 五穀大夫····· | 213 |
| 小二····· | 187 | 毛狐····· | 214 |
| 庚娘····· | 190 | 翩翩····· | 215 |
| 官梦弼····· | 193 | 黑兽····· | 218 |
| 鸬鹚····· | 198 | | |

卷 四

| | | | |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 余德····· | 221 | 库官····· | 251 |
| 杨千总····· | 222 | 酆都御史····· | 252 |
| 瓜异····· | 223 | 龙无目····· | 253 |
| 青梅····· | 223 | 狐谐····· | 253 |
| 罗刹海市····· | 229 | 雨钱····· | 256 |
| 田七郎····· | 235 | 妾击贼····· | 256 |
| 产龙····· | 240 | 驱怪····· | 257 |
| 保住····· | 240 | 姊妹易嫁····· | 259 |
| 公孙九娘····· | 241 | 续黄梁····· | 261 |
| ○ 促织····· | 246 | 龙取水····· | 266 |
| 柳秀才····· | 249 | 小猎犬····· | 266 |
| 水灾····· | 250 | 棋鬼····· | 268 |
| 诸城某甲····· | 250 | 辛十四娘····· | 269 |

| | | | |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 白莲教····· | 276 | 念秧····· | 284 |
| 双灯····· | 277 | 蛙曲····· | 290 |
| 捉鬼射狐····· | 278 | 鼠戏····· | 291 |
| 蹇偿债····· | 279 | 泥书生····· | 291 |
| 头滚····· | 280 | 土地夫人····· | 292 |
| 鬼作筵····· | 280 | 寒月芙蕖····· | 292 |
| 胡四相公····· | 281 | 酒狂····· | 294 |

卷 五

| | | | |
|-----------|-----|------------|-----|
| 阳武侯····· | 299 | 土偶····· | 335 |
| 赵城虎····· | 300 | 长治女子····· | 336 |
| 螳螂捕蛇····· | 301 | 义犬····· | 338 |
| 武技····· | 301 | 鄱阳神····· | 338 |
| 小人····· | 302 | 伍秋月····· | 339 |
| 秦生····· | 303 | 莲花公主····· | 342 |
| 鸦头····· | 303 | 绿衣女····· | 345 |
| 酒虫····· | 308 | 黎氏····· | 346 |
| 木雕美人····· | 309 | 荷花三娘子····· | 347 |
| 封三娘····· | 309 | 骂鸭····· | 350 |
| 狐梦····· | 313 | 柳氏子····· | 350 |
| 布客····· | 316 | 上仙····· | 352 |
| 农人····· | 317 | 侯静山····· | 353 |
| 章阿端····· | 318 | 钱流····· | 354 |
| 鮓饩媪····· | 321 | 郭生····· | 354 |
| 金永年····· | 321 | 金生色····· | 355 |
| 花姑子····· | 322 | 彭海秋····· | 358 |
| 武孝廉····· | 326 | 堪舆····· | 362 |
| 西湖主····· | 328 | 窦氏····· | 363 |
| 孝子····· | 333 | 梁彦····· | 365 |
| 狮子····· | 334 | 龙肉····· | 366 |
| 阎王····· | 334 | | |

卷 六

| | |
|---------------|---------------|
| 谪令····· 367 | 山神····· 406 |
| 马介甫····· 367 | 萧七····· 407 |
| 魁星····· 375 | 乱离二则····· 410 |
| 庠将军····· 375 | 豨蛇····· 411 |
| 绛妃····· 375 | 雷公····· 412 |
| 河间生····· 378 | 菱角····· 412 |
| 云翠仙····· 379 | 饿鬼····· 414 |
| 跳神····· 383 | 考弊司····· 415 |
| 铁布衫法····· 384 | 阎罗····· 418 |
| 大力将军····· 384 | 大人····· 418 |
| 白莲教····· 386 | 向杲····· 419 |
| 颜氏····· 386 | 董公子····· 420 |
| 杜翁····· 389 | 周三····· 421 |
| 小谢····· 389 | 鸽异····· 422 |
| 缢鬼····· 395 | 聂政····· 425 |
| 吴门画工····· 395 | 冷生····· 426 |
| 林氏····· 396 | 狐惩淫····· 427 |
| 胡大姑····· 398 | 山市····· 428 |
| 细侯····· 400 | 江城····· 429 |
| 狼三则····· 402 | 孙生····· 435 |
| 美人首····· 403 | 八大王····· 437 |
| 刘亮采····· 403 | 戏缢····· 440 |
| 蕙芳····· 404 | |

卷 七

| | |
|-------------|---------------|
| 罗祖····· 441 | 二商····· 456 |
| 刘姓····· 442 | 沂水秀才····· 458 |
| 邵女····· 444 | 梅女····· 459 |
| 巩仙····· 451 | 郭秀才····· 463 |

| | |
|-----|-----|
| 死僧 | 464 |
| 阿英 | 465 |
| 橘树 | 469 |
| 赤字 | 470 |
| 牛成章 | 470 |
| 青娥 | 472 |
| 镜听 | 477 |
| 牛瘟 | 478 |
| 金姑夫 | 479 |
| 梓潼令 | 480 |
| 鬼津 | 480 |
| 仙人岛 | 481 |
| 阎罗薨 | 487 |
| 颠道人 | 488 |
| 胡四娘 | 490 |
| 僧术 | 493 |

| | |
|-----|-----|
| 禄数 | 494 |
| 柳生 | 494 |
| 冤狱 | 497 |
| 鬼令 | 499 |
| 甄后 | 500 |
| 宦娘 | 502 |
| 阿绣 | 506 |
| 杨疤眼 | 511 |
| 小翠 | 511 |
| 金和尚 | 516 |
| 龙戏蛛 | 519 |
| 商妇 | 519 |
| 阎罗宴 | 520 |
| 役鬼 | 521 |
| 细柳 | 521 |

卷 八

| | |
|------|-----|
| 画马 | 527 |
| 局诈 | 528 |
| 放蝶 | 532 |
| 男生子 | 532 |
| 钟生 | 533 |
| 鬼妻 | 536 |
| 黄将军 | 537 |
| 三朝元老 | 537 |
| 医术 | 538 |
| 藏鼠 | 539 |
| 梦狼 | 540 |
| 夜明 | 542 |
| 夏雪 | 543 |

| | |
|------|-----|
| 化男 | 544 |
| 禽侠 | 544 |
| 鸿 | 545 |
| 象 | 545 |
| 负尸 | 546 |
| 紫花和尚 | 546 |
| 周克昌 | 547 |
| 嫦娥 | 548 |
| 鞠药如 | 554 |
| 褚生 | 554 |
| 盗户 | 557 |
| 某乙 | 559 |
| 霍女 | 560 |

| | |
|-----|-----|
| 司文郎 | 565 |
| 丑狐 | 570 |
| 吕无病 | 571 |
| 钱卜筮 | 577 |
| 姚安 | 579 |
| 采薇翁 | 580 |
| 崔猛 | 581 |
| 诗谏 | 586 |
| 鹿衔草 | 588 |

| | |
|-----|-----|
| 小棺 | 588 |
| 邢子仪 | 588 |
| 李生 | 590 |
| 陆押官 | 591 |
| 蒋太史 | 593 |
| 邵土梅 | 594 |
| 顾生 | 594 |
| 陈锡九 | 595 |

卷 九

| | |
|-----|-----|
| 邵临淄 | 601 |
| 于去恶 | 601 |
| 狂生 | 606 |
| 澄俗 | 606 |
| 凤仙 | 607 |
| 佟客 | 612 |
| 辽阳军 | 613 |
| 张贡士 | 614 |
| 爱奴 | 615 |
| 单父宰 | 618 |
| 孙必振 | 619 |
| 邑人 | 619 |
| 元宝 | 620 |
| 研石 | 620 |
| 武夷 | 620 |
| 大鼠 | 621 |
| 张不量 | 621 |
| 牧竖 | 622 |
| 富翁 | 622 |
| 王司马 | 623 |

| | |
|------|-----|
| 岳神 | 623 |
| 小梅 | 624 |
| 药僧 | 628 |
| 于中丞 | 629 |
| 皂隶 | 630 |
| 绩女 | 630 |
| 红毛毡 | 633 |
| 抽肠 | 633 |
| 张鸿渐 | 634 |
| 太医 | 639 |
| 牛飞 | 639 |
| 王子安 | 640 |
| 刁姓 | 641 |
| 农妇 | 642 |
| 金陵乙 | 642 |
| 郭安 | 643 |
| 折狱 | 644 |
| 义犬 | 647 |
| 杨大洪 | 648 |
| 查牙山洞 | 649 |

| | | | |
|-----------|-----|----------|-----|
| 安期岛····· | 650 | 乔女····· | 663 |
| 沉俗····· | 651 | 蛤····· | 665 |
| 云萝公主····· | 652 | 刘夫人····· | 665 |
| 鸟语····· | 659 | 陵县狐····· | 669 |
| 天官····· | 660 | | |

卷 十

| | | | |
|----------|-----|-----------|-----|
| 王货郎····· | 671 | 贾奉雉····· | 702 |
| 疲龙····· | 671 | 胭脂····· | 706 |
| 真生····· | 672 | 阿纤····· | 713 |
| 布商····· | 674 | 瑞云····· | 716 |
| 彭二挣····· | 675 | 仇大娘····· | 718 |
| 何仙····· | 675 | 曹操冢····· | 725 |
| 牛同人····· | 676 | 龙飞相公····· | 726 |
| 神女····· | 677 | 珊瑚····· | 729 |
| 湘裙····· | 682 | 五通····· | 733 |
| 三生····· | 686 | 又····· | 735 |
| 长亭····· | 688 | 申氏····· | 738 |
| 席方平····· | 692 | 恒娘····· | 741 |
| 素秋····· | 696 | 葛巾····· | 744 |

卷 十 一

| | | | |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 冯木匠····· | 749 | 王者····· | 774 |
| 黄英····· | 749 | 某甲····· | 776 |
| 书痴····· | 754 | 衢州三怪····· | 776 |
| 齐天大圣····· | 757 | 拆楼人····· | 777 |
| 青蛙神····· | 759 | 大蝎····· | 777 |
| 又····· | 762 | 陈云栖····· | 778 |
| 任秀····· | 764 | 司札吏····· | 783 |
| 晚霞····· | 766 | 蚰蜒····· | 784 |
| 白秋练····· | 770 | 司训····· | 784 |

| | | | |
|----------|-----|-----------|-----|
| 黑鬼····· | 785 | 乐仲····· | 800 |
| 织成····· | 785 | 香玉····· | 804 |
| 竹青····· | 788 | 三仙····· | 809 |
| 段氏····· | 791 | 鬼隶····· | 809 |
| 狐女····· | 793 | 王十····· | 810 |
| 张氏妇····· | 794 | 大男····· | 812 |
| 于子游····· | 795 | 外国人····· | 816 |
| 男妾····· | 796 | 韦公子····· | 816 |
| 汪可受····· | 796 | 石清虚····· | 818 |
| 牛犊····· | 797 | 曾友于····· | 820 |
| 王大····· | 797 | 嘉平公子····· | 824 |

卷 十 二

| | | | |
|------------|-----|----------|-----|
| 二班····· | 827 | 周生····· | 853 |
| 车夫····· | 828 | 褚遂良····· | 854 |
| 乩仙····· | 828 | 刘全····· | 855 |
| 苗生····· | 829 | 土化兔····· | 856 |
| 蝎客····· | 831 | 鸟使····· | 857 |
| 杜小雷····· | 831 | 姬生····· | 857 |
| 毛大福····· | 832 | 果报····· | 859 |
| 雷神····· | 833 | 公孙夏····· | 860 |
| 李八缸····· | 834 | 韩方····· | 862 |
| 老龙船户····· | 835 | 纫针····· | 863 |
| 青城妇····· | 836 | 桓侯····· | 867 |
| 鸱鸟····· | 837 | 粉蝶····· | 869 |
| 古瓶····· | 838 | 李檀斯····· | 872 |
| 元少先生····· | 839 | 锦瑟····· | 872 |
| 薛慰娘····· | 840 | 太原狱····· | 877 |
| 田子成····· | 843 | 新郑讼····· | 878 |
| 王桂庵····· | 846 | 李象先····· | 879 |
| 寄生(附)····· | 849 | 房文淑····· | 880 |

| | | | |
|----------|-----|----------|-----|
| 秦桧····· | 882 | 一员官····· | 884 |
| 浙东生····· | 883 | 丐仙····· | 885 |
| 博兴女····· | 883 | 人妖····· | 888 |

卷 一

考 城 隍

我姐夫的祖父宋公，名焘，是县学的学生。一天，他生病躺在床上，看见一名公差手里拿着公文，牵着一匹白额马，走来对他说：“请你去参加考试。”宋公说：“主考大人还没光临，怎么就开考了呢？”公差并不回答，只是一个劲地催促赶快动身。宋公勉强支撑起病体，骑马跟公差前去。一路经过的地方都很生疏。

来到一个城市，像是帝王的京城。过了一会，进入官府，屋宇殿堂十分壮丽。大殿上坐着十几个当官的，都不知名姓，只有关圣帝君可以认出来。廊檐下摆着桌子、凳子各两只，已经先有一个秀才坐在下首的座位上。宋公就挨着他坐下。两张桌上都备有纸笔。不一会儿，考题传下来，宋公一看，是八个字：“一人二人，有心无心。”两人文章做好，呈递到殿上。宋公文章中有这样几句话：“故意做好事，即使好，也不奖赏；无意间做了坏事，即使坏，也不惩罚。”殿上各位神人互相传看，赞不绝口。

神人召唤宋公上殿，对他说道：“河南缺一个城隍，你正称职。”宋公这才明白是怎么回事，磕头哭道：“荣受重任，岂敢推辞；但是老母年已七十，无人奉养。恳请让我侍奉老母安享天年，然后前来听候录用。”殿上一个像是帝王模样的神人，当时就命人查核宋母寿限。有个胡须长长的官吏，捧着生死簿翻阅一遍，回报说：“还有九年阳寿。”诸位神人正在犹豫不决的时候，关帝说道：“不妨叫张君先去代理九年，到时候再接替就行了。”于是，那个帝王模样的神人对宋公说：“你本应当立即赴任，现在本着仁孝之心，给你九年假期，到时候自然还要来召唤你。”又对张秀才勉励了几句。

宋公和张秀才磕了头退下大殿。张秀才握着宋公的手，一直把他送到城外，并告诉宋公，自己是长山县张某某。还吟诗赠别。张秀才的诗，宋公大多忘了，只记得其中有这样两句：“有花有酒春常在，无烛无灯夜自明。”宋公上了马，就告别而去。等回到家中，好像忽然从睡梦中醒来，这时

他已经死去三天了。母亲听见棺材里有呻吟的声音，急忙把他扶了出来，好半天才能说话。他到长山打听，果然有个张秀才在那天死了。

九年以后，母亲果然去世了。宋公安葬好母亲，洗好澡，进屋就死了。他岳父家住在城里西门内，忽然看见宋公骑马而来，那马系着雕花胸带，马头两边缀着大红饰物，身后跟着很多车马随从。宋公登上厅堂，朝岳父拜了一拜，就走了。岳父全家都感到惊讶疑惑，不知这是宋公的神灵。于是派人到乡下打听消息，宋公已经死了。

宋公有一部自撰的小传，可惜动乱之后荡然无存，这里讲的故事，只是其中大略而已。

耳 中 人

谭晋玄是县里的秀才，他深信气功，酷暑严寒也不停止练功。练了几个月，好像有点得气了。一天，他正盘腿静坐，听见耳中有苍蝇嗡嗡叫似的轻微声音说：“可以看见了。”张开眼睛，那声音就消失了。闭上眼睛，调定气息，又照旧听到那句话。谭生自以为道术就要成功，心中暗暗高兴。从此以后，每当静坐就能听到。心想等耳中人再说话时，答应一声看看会怎样。

一天，耳中人又说话了，谭生便轻声应道：“可以看见了。”不一会儿，就觉得耳朵里悉悉索索像有什么东西在出来。他微微睁眼斜视，只见一个才三寸来长的小人，容貌凶恶丑陋，就像夜叉模样，在地上打转。谭生心里暗暗惊奇，暂且集中注意力观察他还有什么变化。

忽然有个邻居来借东西，一面敲门，一面呼唤谭生。小人听到声音，神情慌张，绕着屋子团团转，就像老鼠找不到洞穴似的。谭生只觉神散魂失，不再知道小人到什么地方去了。从此他就得了疯颠病，不停地喊叫，医治了半年，才慢慢地痊愈。